सफेद शेरों के लोप की कहानी

प्रमोद भार्गव

भोपाल के वन विहार में हाल ही में अज्ञात कारणों से एक दुर्लभ सफेद शेर'ईशू'की मौत हो गई। तीन साल के इस बाघ को 2 साल पहले 21 नवंबर 2004 को वन विहार में लाया गया था। इसकी मां कीकू समेत अब इस वन विहार में 3 सफेद शेर बचे हैं। सफेद शेरों के वंश की बुनियाद रखने वाले मोहन की औलाद रुस्तम ने भी इसी वन विहार में अंतिम सांसें ली थीं। ईशू की मौत के बाद वन्य जीव प्रेमियों को यह चिंता सताने लगी है कि अब इस वंश का लोप ही न हो जाए।

चार दशक पहले तक विंध्याचल की कैमूर पर्वत ृंखला के सघन वनों में सफेद शेरों का प्राकृतिक आवास और क्रीड़ा स्थल था। पर अब इस आदिम वन प्रांतर में सफेद शेर एक गौरवशाली अतीत बनकर रह गया है। रीवा, सीधी और शहडोल के जंगल के हज़ारों वर्ग किलोमीटर इलाके में सफेद शेरों का आवास था। इसे इन्हीं जंगलों में पहली बार अनायास ही देखा गया था। 1951 में सीधी जिले की गौपद बनास तहसील में शेर-शेरनी का एक जोड़ा नरभक्षी हो गया था। इस जोड़े का उत्पात कैमूर-केहचुआ के जंगलों के आसपास बसे गांवों में जारी था। इन जंगलों में उस समय सैकड़ों की तादात में बाघ थे।

नरभक्षी शेरों का सफाया करने के लिए रीवा नरेश गुलाब सिंह और उनके पुत्र मार्तण्ड सिंह जूदेव ने बरगड़ी में शिविर लगाया। नरभक्षी शेरों की टोह में भटकते हुए 27 मई 1951 को गुलाबसिंह को पीले रंग पर काली पट्टी वाली एक शेरनी मिली। इसके साथ चार बच्चे भी थे। इनमें तीन बच्चे तो सामान्य थे लेकिन एक बच्चा सफेद रंग का था। उसके शरीर पर भूरी पट्टियां थी। रीवा महाराज ने उसे पिंजरे में कैद करवा लिया। इस सफेद शेर शावक का नाम मोहन रखा और इसकी वंश वृद्धि के लगातार प्रयास किए। दुनिया में पाए जाने वाले सभी सफेद शेर इसी मोहन के वंशज हैं। हालांकि इसके पूर्व रीवा के नरेश कई सफेद शेरों को मौत की नींद सुला चुके थे।

रीवा नरेश ने दूरदृष्टि से काम लेते हुए पीले रंग की सुकेशी नाम की एक शेरनी को उसके साथ रख दिया। जल्दी ही इस जोड़े में अंतरंगता कायम हो गई और इस जोड़े ने तीन बार बच्चे जने, लेकिन सभी बच्चे साधारण ही निकले। सफेद शेर की नस्ल बचाने के लिए रीवा महाराज गुलाबसिंह और मार्तण्ड सिंह ने सुकेशी को मोहन से अलग कर दिया तथा मोहन और सुकेशी से उत्पन्न एक शेरनी से पैदा शेरनी राधा को मोहन के पास छोड़ दिया। राधा और मोहन के संगम से अक्टूबर 1958 में चार सफेद शावकों का जन्म हुआ। बाद में इसी जोड़े से 1960 में तीन बच्चे और पैदा हुए। इनमें दो सफेद और एक पीला था। 1952 में फिर इनके दो बच्चे हुए और दोनों ही सफेद। इस तरह सफेद शेरों की वंश वृद्धि होती गई और ये रीवा, सीधी से निकल कर पूरी दुनिया में पहुंचे।

रीवा महाराज ने सफेद शेर का एक बच्चा अमरीका के राष्ट्रपति आइजनहॉवर को भेंट किया था। जून 1963 में चंपा-चमेली सफेद शेरों का जोड़ा इंग्लैंड पहुंचाया गया। कोलकाता के चिड़ियाघर को भी नीलाद्रि और हिमाद्रि नाम का एक जोड़ा दिया गया। राधा-मोहन से पैदा हुए बाकी शावकों को दिल्ली के चिड़ियाघर में भेज दिया गया। लेकिन रीवा महाराज ने राधा-मोहन और सुकेशी को जीवनपर्यंत अपने पास रखा। इस तरह इस अद्‌भुत प्राणी का विस्तार होता गया और इनकी संख्या चिड़ियाघरों में बढ़कर 70 हो

गई थी। पर वन अधिकारियों की लापरवाही से इनकी संख्या घटने लगी। हालांकि सफेद शेरों की मातृभूमि दुहिया घाटी (सीधी) में वन विभाग ने आज भी एक ऐसा बोर्ड सड़क किनारे लगा रखा है कि इन जंगलों में सफेद शेर अभी भी उपलब्ध हैं। पर हकीकत यह है कि दुर्लभ सफेद शेर की नस्ल तो इन वनों में बची ही नहीं है, बाघ के दर्शन होना भी दुर्लभ बात हो गई है।

इन जंगलों से शेरों का विनाश करने की नादानी भी उन्हीं राजा-महाराजाओं ने की थी जो बाद में इनकी वंश वृद्धि के लिए प्रयत्नशील देखे गए। शिकारगंज नौठिया (सीधी) और बांधवगढ़ (शहडोल) के शिकारगाहों में शेरों का शिकार करना एक होड़ थी। इसी प्रतिस्पर्धा के चलते वेंकटरमण सिंह जूदेव ने 1913 तक 111 शेर मारे थे। गुलाब सिंह ने 1923-24 तक 144 शेर मारे। इनमें 83 शेर तो केवल 1923 में ही मार गिराए थे। मार्तण्ड सिंह ने 1952-53 तक 125 शेर मारे थे।

रीवा राज्य दर्पण के अनुसार सन 1935 में सीधी के जंगल से महाराजा वेंकटरमण सिंह ने एक सफेद शेर पकड़कर अंग्रेज़ों को भेंट किया था। 1937 में महाराज गुलाब सिंह द्वारा एक सफेद शेर का शिकार किए जाने का उल्लेख है। 1944 में रीवा के पास प्रशासक जेल्डरिज ने भी एक सफेद शेर का शिकार किया था। 1946 में महाराज मार्तण्ड सिंह ने भी एक सफेद शेर को मारकर अपने शिकार शौक की पूर्ति की थी। चुरहट तहसील के जमुनिहा गांव के निकट ही 10 फीट लंबे एक सफेद शेर को मार गिराने की घटना रीवा गज़ट में दर्ज है। ये शिकारगाह राजाओं, जागीरदारों और उनके विशिष्ट मेहमानों के लिए ही आरक्षित थे। वे लोग ही इन जंगलों में शिकार कर सकते थे। खास मेहमानों के लिए सफेद शेरों का भी शिकार कराया जाता था। शिकार की इन खुली प्रतिस्पर्धाओं के चलते इन जंगलों से सफेद शेर वन और वन्य प्राणी संरक्षण अधिनियम 1972 के लागू होने के पहले ही मारे जा चुके थे। बाघ भी इक्का-दुक्का ही बचे थे।

वंश-विनाश की इन करतूतों के चलते मध्यप्रदेश में पैदा होकर दुनिया भर में पहुंचे सफेद शेर खुद मध्यप्रदेश के लिए एक इतिहास बनकर रह गए हैं। भोपाल के वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में 19 जून 1991 को रेशमा नाम की इकलौती सफेद शेरनी की हत्या श्यामू नाम के पीले शेर ने कर दी थी। उसके बाद एक नर सफेद शेर रह गया था रुस्तम। प्राणी विशेषज्ञों ने रुस्तम और रेशमा की वंश वृद्धि के प्रयास लगातार तीन साल किए। इसी कोशिश में पीले रंग के शेर श्यामू और रेशमा को पास-पास रखा गया था। जब विशेषज्ञों को लगा कि दोनों में प्यार हो गया है तो 19 जून 1991 को इनके बीच की जाली हटा दी गई। जाली हटी तो रेशमा श्यामू के निकट आई । श्यामू ने लपककर उसकी गर्दन अपने जबड़ों में जकड़ ली। दो-तीन मिनट तक उसकी गर्दन मुंह में दबाए रखने के बाद ही श्यामू ने रेशमा को छोड़ा। 20 मिनट तक तड़पने के बाद रेशमा के प्राण-पखेरू उड़ गए। प्राणी विशेषज्ञ इस खतरे से वाकिफ थे। उन्हें पता था कि वयस्क हो जाने के बाद शेरों का समागम कठिन हो जाता है। फिर भी खतरा मोल लेकर दोनों शेरों को मिला दिया गया। श्यामू द्वारा हमले की संभावना का सामना करने के लिए जलती मशालें, बंदूक और नींद की दवाइयों का भी इंतज़ाम था। लेकिन जिस फुर्ती से श्यामू ने रेशमा पर हमला किया उससे सब हक्के-बक्के रह गए और सुरक्षा के सारे इंतज़ाम धरे रह गए। विशेषज्ञ चाहते थे कि किसी तरह पहले दोनों सफेद शेरों का जोड़ा बिठाया जाए। लेकिन यह संभव नहीं हो सका। पीले रंग की शेरनी लता और सफेद रुस्तम की भी जोड़ी बिठाने की नाकाम कोशिश की गई। इसी कार्यवाही में रुस्तम ने लता की हत्या कर दी थी। मध्यप्रदेश में सफेद शेरों की नस्ल बचाने की अंतिम कोशिश के साथ श्यामू और रेशमा का जोड़ा बिठाने का प्रयास किया गया। जिसका परिणाम हमने ऊपर देखा। कुछ समय बाद एकाकी जीवन बिताते हुए रुस्तम ने भी दम तोड़ दिया।

रेशमा को 1988 में भुवनेश्वर के नंदन कानन से भोपाल वन विहार में लाया गया था और इसके जीवन-साथी के रूप में रुस्तम को दिल्ली के चिड़ियाघर से। रुस्तम का पूर्वज रीवा का प्रसिद्ध सफेद शेर मोहन था। कैमूर विंध्याचल के वन खंडों से तो सफेद शेर लुप्त हो ही चुके हैं। ईशू की मौत के बाद ये आशंका जताई जा रही है कि अब वन विहार में इनकी वंशवृद्धि होना असंभव ही है। ***(स्रोत फीचर्स)***